IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

स्त्री या नारी विमर्श, हिंदी गजल

डॉ. भुवनेश कुमार परिहार

सहायक आचार्य-हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, सांभरलेक, जयपुर, राजस्थान

सार

इक्कीसवीं सर्दी में साहित्य की अन्य विधाओं की भांति ही हिन्दी गजल में भी अनेक परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं। अन्य बातों के साथ ही हिन्दी के गजल ने स्त्री समाज की स्थितियों पर भी गंभीरता से विचार किया है। उन्होंने इस बात को महसूस किया है कि सृष्टि के आरंभ से ही समाज के विकास में स्त्रियों की भूमिका पुरुषों से महत्वपूर्ण रही है और इसलिए एक समय में समाज मातृप्रधान था। आगे चलकर स्त्रियों की भूमिका घर के भीतर तक सीमित कर दी गई और उनके बंधनों को उनका आभूषण बनाकर पेश किया गया। उन्हें गुलाम बनाने के लिए अनेक प्रकार की साजिशें रची गयीं। कल्पना में उन्हें देवी और पूज्या बताया गया। किंतु व्यवहार में उन्हें भोग्या और दासी बना दिया गया। कभी उन्हें बाजार में बेचा गया और कभी दान की वस्तु बनाया गया। ऐसा नहीं था कि नारियों में प्रतिभाशक्ति या शक्ति की कमी थी, लेकिन जब भी वे पुरुषों के सामने चुनौती बनकर खड़ी हुईं उन्हें भयभीत करके दबा दिया गया। गार्गी और याज्ञवल्क का शास्त्रार्थ इसका एकमात्र नहीं, सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। आगे चलकर सती प्रथा, बहुविवाह प्रथा और विधवाओं की समस्याएं उसी गुलामी और असुरक्षा की भावना की परिणति थीं। भारतीय नवजागरण के नायकों ने नारी की शक्ति को पहचानकर नारी जागरण और मुक्ति की बात को स्वाधीनता-संघर्ष के साथ जोड़ा था। भारतेन्दु का 'नारी नर सम होहिं' का नारा इसी भाव से प्रेरित था।
स्वाधीनता प्राप्ति के बाद सबके साथ ही स्त्रियों की स्थिति में भी, खासकर शिक्षित स्त्रियों की स्थिति में कुछ सुधार हुआ। किंतु स्त्रियों की बहुसंख्यक आबादी फिर भी पूर्वदशा में बनी रही और बनी हुई है। अब भी उनके कदम-कदम पर वर्जनाएं हैं और अब भी बहुत सारी स्त्रियां घरों की चहारदीवारी में जीवन गुजार देती हैं और बाहर के संसार से अपरिचित रहती हैं। बचपन में पिता, जवानी में पति और बुढ़ापे में पुत्र की गुलामी में रहना उनकी नियति बनी हुई है। शिक्षित औरतों को, उनमें भी कामकाजी औरतों को एक प्रकार की आाादी अवश्य मिली, किंतु घर से बाहर निकलते ही यौनादि एवं दूसरे शोषणों का शिकार होने लगीं। पूंजीवादी बाा◌ारवाद ने उन्हें विज्ञापन की चीज बना दिया और अब तो बिना स्त्री देह की चमक के किसी विज्ञापन में प्रभाव ही नहीं पैदा होता है। महानगरों के उत्तर आधुनिक और भोगवादी समाज व संस्कृति में तमाम अच्छे घरों की लड़कियां भी कालगर्ल्स के रूप में वेश्यावृत्ति की ओर बढ़ रहीं हैं। हमारी अर्थवादी व्यवस्था और पुरुषप्रधान समाज ने इसे रोजगार मानना आरंभ कर दिया है और उन्हें सेक्सवर्कर के नाम से हर चीज में लाभ तलाशा जाने लगा है और दहेज जैसी समस्याएं लगातार भयावह होती गई हैं। हिन्दी ंगालकारों ने इन सारी स्थितियों को बहुत गंभीरता और सहानुभूति के साथ चित्रित किया है।

परिचय

पुरुष-प्रधान भारतीय समाज में नारी की स्थिति यह है-

हिन्दुस्तानी औरत यानी
घर भर की खातिर कुर्बानी
गृहलक्ष्मी पद की व्याख्या है
चौका-चूल्हा-रोटी-पानी
कत्ल हुआ कन्या-भ्रूणों का
तहा◌ीबें दिखीं बेमानी
-शिवओम् अम्बर

इसको मिलेगा प्यार या स्टोव पिया से,
बाबुल तुम्हारी बिटिया जो घर छोड़ रही है।
-अशोक अंजुम

दिल में सौ दर्द पाले बहन-बेटियां,
घर में बांटें उजाले बहन-बेटियां।
हो रहीं शादियों के बहाने बहुत,
भेड़ियों के हवाले बहन-बेटियां।
-ओमप्रकाश यति

हजार चुप से घिरी हलचलों के घेरे में,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

रुकी-रुकी सी हिचकती सी कोई सांस हो तुम।
-विजय बहादुर सिंह
कहीं तलाक कहीं अग्नि परीक्षाएं हैं,
आज भी इन्द्र हैं, गौतम हैं, अहिल्याएं हैं।
प्यार की राह में दुष्यंत जिन्हें छोड़ गए,
ये ब्याह-शादियां हैं खेल गुड्डे-गुड़िया के
कहीं भी हांक दो खूंटे से बंधी गायें हैं।
-वशिष्ठ अनूप
अच्छा दहेज दे न सका मैं बस इसलिए,
दुनिया में जितने ऐब थे बेटी में आ गये।
-तुंफैल चतुर्वेदी
आजादी, प्रगति, आधुनिकता और शिक्षा के बावजूद स्त्रियों की स्थिति अब भी नारकीय बनी हुई है। अब भी उनके कदम-कदम पर चुनौतियां हैं-[1,2]
बच्चियां, लड़कियां, औरतें,
कांच की खिड़कियां औरतें।
कोख से ही सजा मिल रही,
की है क्या गलतियां औरतें।
-वरिष्ठ अनूप
औरत तुम्हारे पांव की जूती की तरह है,
जब बोरियत महसूस हो घर से निकाल दो।
-अदम गोंडवी
हिन्दी गजल के श्रेष्ठ रचनाकार कमलेश भट्ट ने भी नारी के विविध रूपों का वर्णन करते हुए उसके साथ जुड़ी हुई मूलभूत समस्याओं का चित्रण किया है-
औरत है एक कतरा, औरत ही खुद नदी है,
देखो तो जिस्म, सोचो तो कायनात-सी है।
संगम दिखाई देता है उसमें ंगम-खुशी का,
आंखों में है समंदर, होठों पे इक हँसी है।
आदम की एक पीढ़ी फिर ंखाक हो गई है,
दुनिया में जब भी कोई औरत कहीं जली है।
-कमलेश भट्ट कमल
गरीब परिवारों की लड़कियों की विवशताओं को बहुत मार्मिक एवं आक्रोशपूर्ण ढंग से इन पंक्तियों में व्यक्त किया गया है-
आठ बरस में ही पढ़ लेती है गुस्ताख नार की भाषा,
पर रहती खामोश गरीबी से भहराकर छोटी लड़की।
जिस दिन दुर्गा, काली, चंडी के मिथकों को समझेगी यह,
रख देगी उस दिन सत्ता की जड़ें हिलाकर छोटी लड़की।
-नचिकेत
औरत की समस्याओं, घुटन और दिनचचा्र को थोड़ा गौरवान्वित रूप देते हुए महेश अनघ ने अपनी एक गजल में बहुत सुंदर ढंग से व्यक्त किया है-
बहुत भली लगती हो, घर का बोझ उठाए तुम,
रेगिस्तानी अधरों पर मुस्कान बिछाए तुम।
आंखों में उपवास अहिंसा खादी की चूनर,
भारत माता जैसी लगती हो बिन खाए तुम।
दिन भर खटती रहीं स्वप्न की नहर खोदने में,
नरम हथेली पर सरसों का बीज बिठाए तुम।
बहुओं को सताने वालों को समझाते हुए उनके भीतर संवदेना और सहानुभूति पैदा करने की कोशिश करते हुए एक कवि ने कहा है कि-[3,4]
आई है छोड़कर वो बाबुल की देहरी को,
बेटी है यह तुम्हारी, इसको नहीं सताओ।
आंसू किसी नार के सैलाब बन न जाएं,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

मासूम है उसे तुम इतना नहीं रुलाओ।
-शंकर प्रसाद करगेली

अशोक अंजुम की कई गालों में लड़कियों की समस्याओं को बहुत प्रामाणिक और मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया गया है-

जब से हुई सयानी बिटिया,
भूली राजा-रानी बिटिया।
जाना तुझे पराए घर को,
मत कर यूं मनमानी बिटिया।
-अशोक अंजुम

पूंजीवादी मानसिकता और पैसे की संस्कृति के कारण दहेज की समस्या आज अपने चरम भयावह रूप में खड़ी है। इस समस्या के कारण लड़कियों के मां-बाप और भाई-भिखारियों की स्थिति में पहुंच जा रहे हैं, वहीं सारी लड़कियां आंखों में मुरझाए सपने के लिए आजीवन कुंवारा रह जा रही है, जिनकी शादियां हो रही हैं उनमें से भी बहुत सारी दुल्हनें आग, जहर, फांसी और अन्य बर्बताओं के हवाले हो जा रही। गालों में इन स्थितियों की बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है-

चाहे गिरवी हवेलियां रख दो,
उनके ंकदमों में बेटियां रख दो।
लड़कियां कह रही हैं जाते समय,
साथ डोली के अर्थियां रख दो।
-सुरेन्द्र चतुर्वेदी

कब बनेगी दुल्हन बेटी सोचकर,
सोचने को और कुछ भाता नहीं।
-सुभाष चन्द्र कुशवाहा

औरतों की बदहाली, परतंत्रता, विवशता और दूसी समस्याओं के अतिरिक्त उनकी मुक्तिकामी चेतना और संघर्षशील भावना का चित्रण भी हिन्दी गालों में दिखाई पड़ता है। जिससे भविष्य के प्रति आशा बंधती है-

ये अभावों से उलझती काम करती औरतें,
अब अंधरे में मशालें बन जलेंगी औरतें।
मौन रहकर सहने या सुनने के दिन तो लद गए,
बात हंक, इंसाफ की खुलकर कहेंगी औरतें।
-बल्ली सिंह चीमा

मिथकीय प्रयोगों के माध्यम से पंकज कुमार राय ने इस युग की स्त्रियों की स्थिति को देखते हुए अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है- [5,6]

वृन्दावन में राधा भटके जसुदा सिसके गली-गली,
बांच रही खंडित रामायण सीता इस संसार की।
-पंकज कुमार राय

लड़कियों और स्त्रियों की जिंदगी कितनी मुश्किलों और कांटों-भरी है, उन्हें हर वक्त किन-किन अग्नि-परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है। इसका चित्रण कवयित्रियों ने भी अपनी गालों में प्रभावशाली ढंग से किया है। इसके अतिरिक्त नारी-समाज की समस्याओं और आशाओं-आकांक्षाओं को भी इन कवयित्रियों ने बड़े प्रामाणिक एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्त किया है-

ये पांव-जैसे मील का पत्थर गड़ा हुआ,
हम फिर भी अपने आप में मीलों चला किये।
-मधुरिमा सिंह

गर्म तपती दोपहर है लड़कियों की जिंदगी,
एक पथरीली डगर है लड़कियों की जिंदगी।
हर घड़ी हर पल सताए पत्थरों का डर जिसे,
वो चकता कांच घर है लड़कियों की जिंदगी।
-कीर्ति भागवत

और लोगों की तरह वह हंस नहीं पाती कभी,
एक लड़की टूटती, जुड़ती, सिसकती रात भर।
-वर्षा सिंह

एक मुद्दत से धैर्य की धरती,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

किसी आकाश के दबाव में थी।
-प्रभा दीक्षित
बस थपेड़े हवाओं के खाते रहे,
सारे मौसम हमें ही सताते रहे।
मन में उड़ने की नाकाम कोशिश लिए,
पिंजरे में पड़े छटपटाते रहे।
-शशि जोशी
जानें किस घर में जाकर ये सुख-दुख सहें,
अपनी किस्मत से अंजान हैं लड़कियां।
गैरियत का सलूक इनसे मत कीजिए,
आपके घर में मेहमान हैं लड़कियां।
-सुमन दुबे
लेखबध्द है सारा जीवन गेरु रची दीवारों में,
बंटा हुआ है संवेदन भी, नाते-रिश्तेदारों में।
नन्हे बच्चे, पसरे खेतों में, खरगोशों में लगते,
हो दूजे पल ही दिखते हैं बदले लक्कड़हारों में।
-सुश्री शरद सिंह[7,8]

विचार-विमर्श

हिन्दी साहित्य का इतिहास काफी प्राचीन रहा है। कई प्रवृतियां ,वादों एवं विधाओं का विकास हिन्दी साहित्य में हुआ है। जब हम समकालीन हिन्दी साहित्य की बात करते हैं तो उनमें एक नवीन विधा ग़ज़ल से हम रूबरू होते हैं। एक समय ऐसा आता है जब नीरस कविता से ऊब चुका पाठक किसी एक ऐसी विधा को पढ़ना चाहता है जो उसके जीवन के अनुभवों को एक नया आयाम प्रदान करे तथा उसके जीवन के सुखद क्षणों को ही नहीं बल्कि उसके जीवन के कटु सत्यए वेदना तथा तात्कालिक समाज की सच्चाइयों को समझे और उनको समाज के समक्ष प्रस्तुत करे। उसी समय दुष्यन्त कुमार का ग़ज़ल.संग्रह ष्साये में धूपष् पाठकों के सामने न केवल श्रृंगारिक ग़ज़ल की विविधताए व्यापकता एवं संजीदगी के साथ उपस्थित होता है बल्कि ग़ज़ल को व्यक्ति और समाज के लिए उपयोगी भी बनाता है। हिन्दी ग़ज़लकारों ने ग़ज़ल के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों को सामने लाने का काम बख़ूबी किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में दिन.प्रतिदिन बस भागे ही जा रहा है। सच तो यह है कि उसे स्वयं अपने लिए भी कुछ करने की फुर्सत नहीं है तो ऐसे में वह समाज और देश के लिए क्या सोचेगाघ् अभिव्यक्ति के अनेक साधन होने के बावज़ूद आज का मनुष्य अपनी भावनाओं को समझने एवं उन्हें प्रेषित करने में स्वयं को असमर्थ महसूस करता है। इन सभी मुद्दों के बीच की कड़ीए रुमानियत और अहमियत दोनों को सुप्रसिद्ध उर्दू शायर कैफ़ी आज़मी की ग़ज़ल का यह शेर बखूबी अभिव्यक्ति प्रदान करता है द श्प्यार का जश्न नयी तरह मनाना होगा ध् ग़म किसी दिल में सही ग़म को मिटाना होगा ।

समकालीनता के परिदृश्य से विचार किया जाये तो सन 1960 ईव के बाद से चाहे उस्ताद नज़ीर अकबराबादी हों या फिर कैफ़ी आज़मी सभी लोगों की शेर.ओ.शायरी में स्त्री.अस्मिता की झलक बख़ूबी दिखाई देती है। रचनाकारों ने अगर स्त्री को मयए प्यालाए सुरा से जोड़ा है तो वह उस समय का वातावरण था इससे यह बिल्कुल नहीं सोचा जाये कि ये शब्द सिर्फ स्त्री को भोग्य के रूप में प्रदर्शित करते हैं बल्कि ये शबद नवचिंतन को भी जन्म देते हैं कि क्या स्त्रियाँ इस उपमा के लिए उपयुक्त हैंघ् क्या समाज में इनकी जगह यही हैघ् इन शब्दों के माध्यम से स्त्री के प्रति ग़ज़ल में जो सहानुभूति व चिंतन का सूत्रपात हुआ वह धीरे.धीरे त्रिलोचन और दुष्यन्त के आगे आज अद्यतन प्रगति कर रहा है और करता ही जा रहा है। अब ग़ज़ल सिर्फ रुमानियत में सिमटी नहीं रही बल्कि वह स्त्री अस्मिता की एक आवाज़ भी बन चुकी है। हिन्दी ग़ज़ल समकालीनता के विभिन्न आयामों को आत्मसात करती हुई उसे आम जनजीवन के साथ जोड़ देती है और आम लोगों के विचारए भावनाए व्यवहार तथा वेदना को उजागर करती है। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल आज समय के स्वर से स्वर मिला रही है। हिन्दी ग़ज़ल में हर प्रकार के अस्तित्ववादी और अस्मितावादी पहलू पर बात की गई है।[9,10] अतः यह स्वाभाविक है कि वर्तमान में साहित्य.चिंतन का मुख्य विषय स्त्री.अस्मिता और नारीवादी चिंतन से उसका दामन खाली नहीं हो सकता। हिन्दी ग़ज़ल ने समय के अनुरूप स्त्री के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन किया है। अब नारी के केवल ईश्वरीय तथा सौन्दर्यात्मक रूप का ही वर्णन नहीं किया जाता बल्कि उसके जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों एवं परिवर्तनों को भी ग़ज़ल में स्थान दिया जाने लगा है। आज के समय में स्त्री का जीवन पहले से कहीं अधिक दूभर हो गया है। उसकी इस परेशानी को समझते हुए दुष्यन्त कुमार लिखते हैं द श्कौन शासन से कहेगाए कौन समझेगा ध् एक चिड़िया इन धमाकों से सिहरती है। श् आज का समाज एक स्त्री के लिए काफ़ी असहजतापूर्ण परिवेश का निर्माण कर रहा है। ऐसे में वह समाज के दहशतगर्दों से स्वयं का

बचाव भी करना चाहती है। यह बात दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल में कुछ इस रूप में अभिव्यक्त हुई है द श्शहर की भीड़.भाड़ से बचकर ध् तू गली से निकल रही होगी। =

आज की नारी अपने अधिकारों के प्रति भी सजग है। आवश्यकता है तो केवल एक चिंगारी की जो उसके अन्दर सुप्त ज्वालामुखी को जागृत करने में सक्षम हो। नारी के माँए भार्याए बहन आदि तथा विभिन्न दैवीय रूपों का ही वर्णन प्रायः साहित्य में देखने को मिलता है। ग़ज़ल के माध्यम से कई ग़ज़लकारों द्वारा नारी की स्वतन्त्रता तथा उसके जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करने का प्रयास समय.समय पर किया गया है सदियों से पद.दलित नारी के जीवन में क्रान्ति का बीज बोने का कार्य भी ग़ज़लकारों ने किया है। साथ ही साथ ग़ज़लकार यह बताने की कोशिश भी करते रहे हैं कि अगर नारी का सही मार्गदर्शन किया जाए तो वह अपने जीवन में परिवर्तन ला सकती है और समाज की दिशा और दशा में भी परिवर्तन एवं सुधार ला सकती है। दुष्यंत कुमार की ग़ज़ल का शेर इस बात को बख़ूबी बयाँ करता है द श्एक चिनगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो ध् इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है। श् विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए समाज में अपना एक विशेष मुकाम हासिल करने वाली नारी के प्रति नरेन्द्र वसिष्ठ कुछ इस तरह से अपने भावों को व्यक्त करते हैं . श्अकसर नींद मेरे ख़्वाबों को यह मंजर दे जाती है ध् एक शिकस्ता नाव है लेकिन तूफाँ से टकराती है।

एक स्त्री के मन की दशा और उसके जीवन को नदी के माध्यम से ग़ज़लकार दुष्यन्त कुछ इस तरह से व्यक्त करते हैं द श्निर्वचन मैदान में लेटी हुई है जो नदी ध् पत्थरों सेए ओट में जो.जाके बतियाती तो है। श् सही परिप्रेक्ष्य में अगर विचार किया जाये तो इसमें भी पुरुष की सहज मानसिकता का रूप परिलक्षित होता है जो एक स्त्री के जीवन में पुरुष के वर्चस्व को बनाये रखना चाहता हैए परन्तु समय में परिवर्तन के साथ जिस तरह नारी की स्थिति में बदलाव आया हैए वह समाज में अपनी स्थिति के प्रति सजग एवं सचेत हुई है। स्त्री अपनी पति.परमेश्वर और गुलाम मानसिकता वाली छवि को तोड़कर अपना स्वतंत्र वजूद बनाने में कामयाब हो रही है तथा पुरुष के समान हर कार्य में उसकी सहभागिनी है। स्त्रियों ने कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से भी बेहतर तरीके से स्वयं की पहचान बनाई है। आधुनिकताए जागरूकता और बौद्धिकता के कारण आज वह अपने अस्तित्वए भावनाओं और इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के प्रति पहले से कहीं अधिक सचेत व सजग हुई है।[2,3] सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा के अनुसार .ष्म्हें न किसी पर जय चाहिएए न किसी से पराजयए न किसी पर प्रभुता चाहिएए न किसी पर प्रभुत्वए केवल अपना वह स्थान व स्वत्व चाहिये जिनका पुरुषों के निकट कोई उपयोग नहीं हैए परन्तु जिनके बिना हम समाज का उपयोगी अंग नहीं बन सकेगी। ष्ष् कुछ इसी तरह के विचार ग़ज़लकार कुँअर ष्बेचैनष् भी व्यक्त करते हैं। ऐसे लोग जो अपनी बच्चियों की क्षमता और हुनर से अनजान होते हैंए उन लोगों को जागरूक करने के लिए वह कहते हैं .श्किसी दिन देख लेना वो उन्हें अंधा बना देगी ध् घरों में कैद कर ली है जिन्होंने रोशनी सारी वर्तमान समय में नारी घर एवं अपने कार्य.क्षेत्र दोनों की जिम्मेदारी बख़ूबी निभा रही है। स्त्री गृहलक्ष्मी हैए अन्नपूर्णा भी है। उसके इन रूपों का वर्णन दूसरा ग़ज़ल शतक में कुँअर ष्बेचैनष् की ग़ज़ल श्दिलों की साँकलेंश् में कुछ इस तरह किया गया है द श्तुम्हारे घर की रौनक ने जो बाँधी हैं अँगोछे में ध् चलो बैठोए पसीना पोंछो और ये रोटियां खोलो। श् आज के समय में भी जिस तरह से नारी का शोषण आये दिन देखने को मिलता है तथा अज्ञानतावश और समाज के कटाक्ष के बाद जो नारी की मनोस्थिति होती है उसे पुरुषोत्तम ष्यज्ञष् इस तरह देखते हैं द श्जिसकी अस्मत लुटी सरेबाज़ार ध् बन गई वो तो गूँगी.बहरी.सी। श् नारी सदैव ही जीवन के विभिन्न पक्षों को सार प्रदान करती हुई उसे संगीतमय बना देती है और नारी का अभाव उस जीवन को संगीतविहीन बना देता है। इसी बात को महेश जोशी अपने शब्दों में कुछ इस तरह पिरोते हैं . श्गोपियों को छोड़ देगा फिर कभी कान्हा तो सुन ध् राग तेरी बांसुरी का बेसुरा हो जाएगा। [3,4]

21वीं सदी की नारी के अनुरूप वर्तमान हिंदी ग़ज़ल का मिज़ाज और तेवर बदला है। आज के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विमर्शों एवं अस्मिताओं में स्त्री अस्मिता का विशिष्ट स्थान है। साहित्य का क्षेत्र संवेदना और विचार का क्षेत्र है। श्महापंडित राहुल सांकृत्यायन का कहना है की केवल लिखने मात्र से स्त्रियाँ दिव्यलोक की प्राणी नहीं हो सकतीं वे भी पुरुषों की तरह इसी लोक की जीव हैं। वे पुरुषों के भोग.विलास की सामग्री मात्र नहीं बल्कि उन्हीं की तरह वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व भी रखती हैं और इसी दृष्टि से साहित्य में उनका चित्रण भी होना चाहिए। श् इसी बात के अनुरूप बल्ली सिंह चीमा कामगार स्त्री के बारे में कुछ तरह अपने ज़ज्बात बयां करते हैं द श्यह अभावों से उलझती काम करती औरतेंध्अब अंधेरे में मशालें बन जलेगीं औरतें। श् कमलेश भट्ट ष्कमलष् नारी के प्रति श्रद्धाभाव से उसके कोमल भावोंए उसके अस्तित्व और अस्मिता को व्यक्त करते हुए लिखते हैं द श्औरत है एक क़तराए औरत ही ख़ुद नदी हैध् देखो तो जिस्मए सोचो तो कायनात सी हैध् संगम दिखाई देता हैए इसमें ग़म ख़ुशी काध् आँखों में है समन्दर होंठों पे एक हँसी हैध् आदम की एक पीढ़ी फिर ख़ाक हो गई हैध् दुनिया में जब भी कोईए औरत कहीं जली हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

भूमंडलीकरण के इस दौर में स्त्री का जीवन केवल चारदीवारी तक ही सिमट कर नहीं रह गया है बल्कि उसे समाज में हर प्रकार के लोगों के साथ व्यवहार करना होता है। नारी को अपने से कम केवल एक पुरुष ही समझता हो ऐसा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण पुरुषवादी मानसिकता वाला समाज उसे पीछे धकेलना चाहता है। समाज में केवल पुरुष ही नहीं हैं स्त्री भी है तभी तो मृदुला अरुण कहती हैं .श्मुझको शिकवे तो बहुत से हैं मगर तुझसे नहीं ध् इस शहर में जो रहेगा बेवफा हो जायेगा। श् हर प्रकार की मुसीबतों को झेलने के बाद भी अगर नारी अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए आवाज उठाती है तो समाज उसे कई तरह के ताने देने लगता है। इसी रोष को शगुफ़्ता ग़ज़ल कुछ इस तरह व्यक्त करती हैं . श्बिखर गई थी मेरी ज़िन्दगी ख़लाओं में ध् समेटती हूँ तो नाराज़ यह जहाँ क्यूँ है। श् महाश्वेता चतुर्वेदी वर्तमान समय में घटित हो रही परिस्थितियों के अनुरूप बात करती हैं। साथ ही उनका मानना यह भी है कि स्त्रियों के प्रति हो रहे अत्याचारए व्यभिचार के लिए कहीं न कहीं समाज स्वयं भी जिम्मेदार है दश्दुरूशासन है अभी ज़िन्दाए निशाचर मुक्त है अबतक ध् हमें संतान को ष्श्वेताष् वही अर्जुन बनाना है। श्सार रूप में यह कहा जा सकता है कि समकालीनता केवल समय.सापेक्षता ही नहीं बल्कि मूल्य.सापेक्षता की भी बात करती है। किसी भी कृति में युगीन यथार्थ की बात ही उसे समकालीनता की श्रेणी में लाती है। श्समकालीन बोध का अर्थ जीवन की बाह्य परिस्थितियों के बोध तक सीमित न होकर उस यथार्थ की पहचान करना है जिसके सारे अंतर्विरोधों और द्वंदों के बीच से गुजरता हुआ मनुष्य अपने विकास के पथ पर अग्रसर होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री के परम्परागत सौन्दर्यात्मक रूप का वर्णन करने की अपेक्षा उसके जीवन के कटु सत्यों और अन्य अनेक पहलूओं को लेकर भी ग़ज़लकारों ने बात की है। कुछ एक ग़ज़लकार इसका अपवाद हो सकते हैं जो आज भी स्त्री के केवल दैवीय एवं भोग्य रूप को ही अपनी ग़ज़लों में अपनाते हैं। आज स्त्री अपनी अस्मिता की तलाश में पुरुष वर्चस्व के सामने चुनौती खड़ी कर रही है। आज के दौर में नारी के प्रति लोगों के दृष्टिकोण के साथ.साथ परिस्थितियों में भी परिवर्तन हो रहा है नारी की स्वतंत्रताए सुरक्षा और उसके अस्तित्व के लिए आज लेखन के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जा रहा है लेकिन एक बात तो निश्चित है कि नारी को स्वयं पुरुष के साथ अपने सहधर्मिणी होने की प्रमाणिकता सिद्ध करनी होगी। समकालीन हिन्दी ग़ज़ल में स्त्री.अस्मिता तथा अस्तित्ववादी चिंतन पर विचार करने के बाद यह तथ्य सामने आते हैं कि हिन्दी ग़ज़ल ने नारी के प्रति अपना दृष्टिकोण तो बदला है परन्तु अभी भी स्त्री जीवन के कई ऐसे पक्ष हैं जिन्हें ग़ज़ल को अपनी संवेदना के माध्यम से आमजन को साक्षात्कार करवाना है। [4,5]

परिणाम

सास बहु मां बहिन सुखी दादी हो।
औरतों को जीने कि आजादी हो ।

प्रेम तो बढ़ता है दुख बंटाने से
अंतरा में आत्मा भी सादी हो ।

खुन्नस पालोगे बिना संवाद तो
एक दूसरे के ही प्रतिवादी हो ।

इस विलास के विषय का विष बड़ा
मारता तड़फाता मन विषादी हो ।

लज्जा से सज्जित सुकोमल नारी हो
प्रेमाधार ना ही भौतिक वादी हो ।

कर्म से पुरुषत्व कर ना मर्म से
धर्म कि ना अन्यथा बर्बादी हो ।

है जगत का सार यदि पुरुषत्व तो
नारी तुम भी शक्ति सम अनादी हो।

निष्कर्ष

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

Women's Day Shayari in Hindi: महिला दिवस हर साल 8 मार्च को मनाया जाता हैं। यह दिन महिलाओं को समाज में उनके योगदान को याद करने और सम्मान देने के लिए मनाया हैं। यहाँ हम महिला दिवस के अवसर पर **महिला के सम्मान में शायरी** प्रस्तुत करा रहे हैं जिनसे महिलाओं का महत्व पता चलता हैं। जिन्हें पढ़ने से आपके अंदर **नारी के प्रति सम्मान** बढ़ेगा और महिलाओं की इज्जत करने की प्रेरणा मिलेगी।[5,6]

महिलाओं की हम सभी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। महिलाओं के महत्व को शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता। महिलाएं ही हैं जो समाज को चलाती हैं। एक महिला एक समाज का एक अभिन्न अंग हैं जिसके बिना प्रकृति अपनी सुंदरता खो देगी।[9,10]

इसलिए आज दुनिया भर में महिलाओं को उनके योगदान की प्रसंशा करने हेतु और उन्हें सम्मानित करने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता हैं।

इस आर्टिकल में हम भी महिला के सम्मान में शायरी लेकर आए हैं जो उनके दिल में औरत के प्रति प्रेम बढ़ाएंगी जो नारी का सम्मान नहीं करते हैं।[6,7]

दिन की रौशनी ख्वाबों को बनाने में गुजर गई,
रात की नींद बच्चे को सुलाने में गुजर गई,
जिस घर में मेरे नाम की तख्ती भी नहीं,
सारी उम्र उस घर को सजाने में गुजर गई।

नारी ही शक्ति है नर की,
नारी ही है शोभा घर की,
जो उसे उचित सम्मान मिले,
तो घर में खुशियों के फुल खिले।

बेटी-बहु कभी माँ बनकर,
सबके ही सुख-दुःख को सहकर,
अपने सब फर्ज निभाती है,
तभी तो नारी कहलाती हैं।

मुस्कुराकर, दर्द भुलाकर, रिश्तों में बंद थी दुनिया सारी,
हर पथ को रोशन करने वाली वो शक्ति है एक नारी।

दुनिया की पहचान है औरत,
हर घर की जान है औरत,
बेटी, बहन, माँ और पत्नी बनकर,
घर घर की शान है औरत।

घर को स्वर्ग बनाती नारी,
घर की इज्जत होती नारी,
देव भी करते जिसकी पूजा,
ऐसी प्यारी मूरत है नारी।

औरत प्यार-मोहब्बत करने वाले को शायद भूल जाए पर इज्जत करने वालों को कभी नहीं भूलती। नारी का सम्मान सबका परम कर्तव्य हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

क्यों कहती है दुनिया कि, नारी कमजोर हैं,
आज भी नारी के हाथों में घर चलाने की डोर हैं।

जब है नारी में शक्ति सारी,
तो फिर क्यों नारी को कहे बेचारी।

कुछ लोग कहते है की नारी का कोई घर नहीं होता,
लेकिन मेरा यकीन है के औरत के बिना कोई घर घर नहीं होता।

जिसने बस त्याग ही त्याग किए,
जो बस दूसरों के लिए जिए,
फिर क्यों उसको धिक्कार दो,
उसे जीने का अधिकार दो।

चलो अब इंसान बने, नारी का सम्मान करें।

अभी रोशन हुआ जाता है रास्ता,
वो देखो एक औरत आ रही हैं।

औरत को जो समझता था जो खिलौना,
उस शख्स को दामाद भी वैसा ही मिला हैं।

एक मुद्दत से मेरी माँ नहीं सोई,
मैंने एक बार कहा था मुझे डर लगता हैं।

बाँधने वाली डोर है औरत,
मत समझो कमजोर है औरत।

औरत खुद एक बहुत बड़ी ताकत है,
इतनी बड़ी की मर्द पैदा करती हैं।

अपमान मत करना नारियों का,
इन के बल पर जग चलता है,
मर्द जन्म लेकर तो इसी की गोद में पलता हैं।

हजारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए,
हजारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए,
हजारों बूंद चाहिए समुद्र बनाने के लिए,
पर एक स्त्री अकेली है काफी है घर को स्वर्ग बनाने के लिए।

नारी से ही नूर है,
वरना सबकुछ बेघर है,
,मकान बनता घर उससे,
वरना ये झर्झर हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 1, January 2023 |

महिलाओं के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। समाज में उनके अहम योगदान को भूलना नहीं चाहिए और समाज हम सब लोगों से मिलकर बना हैं। अगर हम औरत का सम्मान करेंगे, उनकी इज्जत करेंगे तो वे समाज को यानि हमारी दुनिया को खूबसूरत बना सकती हैं।इस आर्टिकल में महिला दिवस के अवसर पर नारी के सम्मान में शायरी लिखने का हमारा यही उदेश्य था किसी के भी दिल में औरत के लिए प्यार व् सम्मान जागे।[7,8]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "Feminism | Definition, History, Types, Waves, Examples, & Facts | Britannica". www.britannica.com (अंग्रेज़ी में). अभिगमन तिथि 2022-11-25.
2. ↑ Gamble, Sarah (2001). "The Routledge Companion to Feminism and Postfeminism".
3. ↑ "हिंदी आलेख- अस्मिता एवं अस्मितामूलक-विमर्श की अवधारणा एवं सिद्धांत". विश्वहिंदीजन चौपाल. अभिगमन तिथि 2022-02-20.
4. ↑ Zajko, Vanda; Leonard, Miriam (2006). Laughing with Medusa: classical myth and feminist thought. Oxford: Oxford University Press. पृ॰ 445. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-19-927438-3.
5. ↑ Howe, Mica; Aguiar, Sarah Appleton (2001). He said, she says: an RSVP to the male text. Madison, NJ: Fairleigh Dickinson University Press. पृ॰ 292. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-8386-3915-3.
6. ↑ Showalter, Elaine (1979). "Towards a Feminist Poetics". प्रकाशित Jacobus, M. (संपा॰). Women Writing about Women. Croom Helm. पपृ॰ 25–36. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 978-0-85664-745-1.
7. ↑ E.g., Owens, Lisa Lucile (2003). "Coerced Parenthood as Family Policy: Feminism, the Moral Agency of Women, and Men's 'Right to Choose'". Alabama Civil Rights & Civil Liberties Law Review. **5**: 1. SSRN 2439294.
8. ↑ Zucker, Alyssa N. (2004). "Disavowing Social Identities: What It Means when Women Say, 'I'm Not a Feminist, but ...'". Psychology of Women Quarterly. **28** (4): 423–35. डीओआइ:10.1111/j.1471-6402.2004.00159.x.
9. ↑ Burn, Shawn Meghan; Aboud, Roger; Moyles, Carey (2000). "The Relationship Between Gender Social Identity and Support for Feminism". Sex Roles. **42** (11/12): 1081–89. डीओआइ:10.1023/A:1007044802798.
10. ↑ Renzetti, Claire M. (1987). "New wave or second stage? Attitudes of college women toward feminism". Sex Roles. **16** (5–6): 265–77. डीओआइ:10.1007/BF00289954.

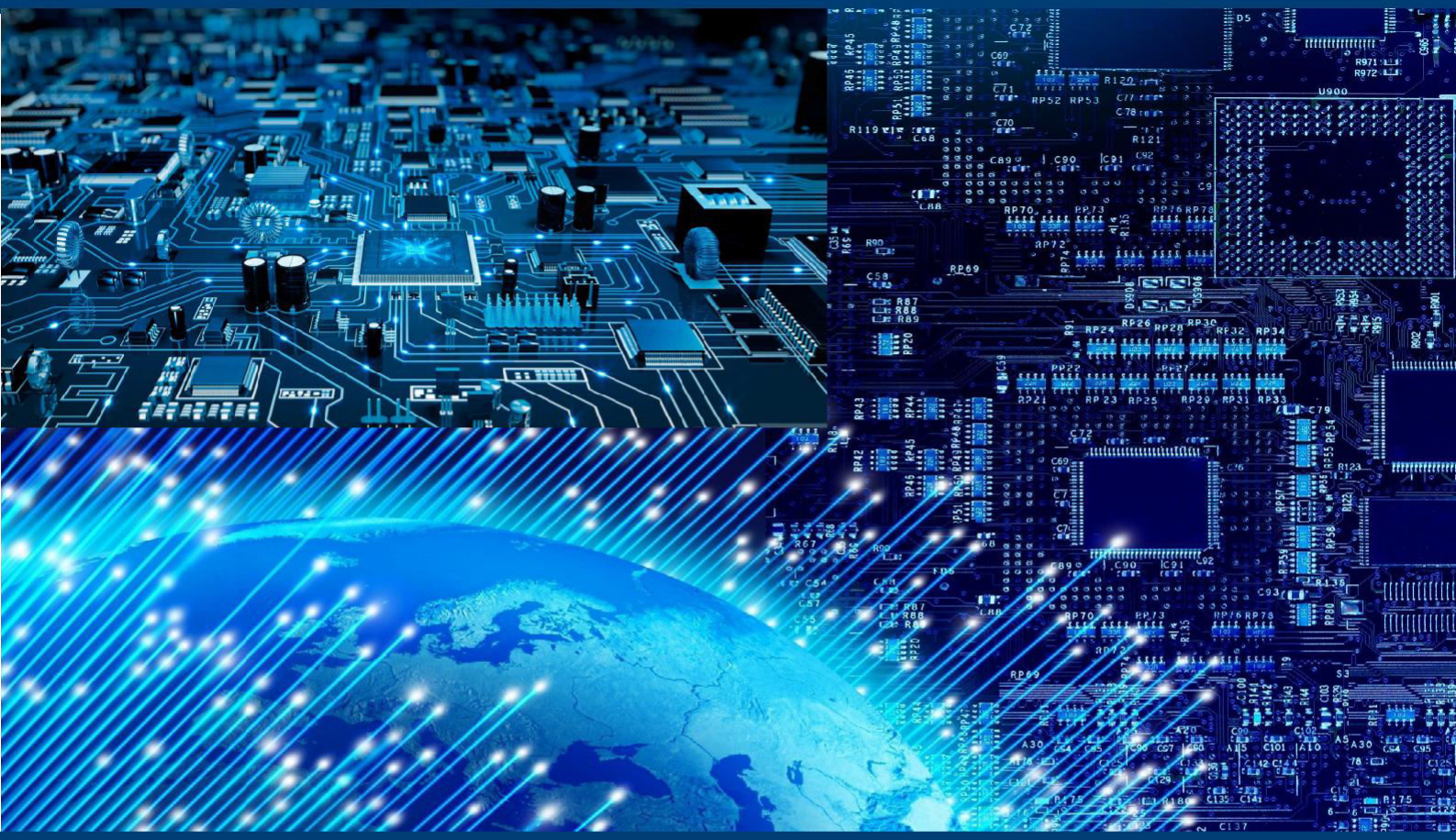

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |